International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वैध गुरुदत्त के उपन्यासों का आधुनिक संदर्भ में सामाजिक युगबोध

शीतल दिलोर,
शोधार्थी,
पीएच. डी, (हिन्दी विभाग),
कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

सारांश

समाज शब्द संस्कृत के दो शब्दों सम् एवं अज से बना है। सम् का अर्थ है इक्टठा व एक साथ अज का अर्थ है साथ रहना। इसका अभिप्राय है कि समाज शब्द का अर्थ हुआ एक साथ रहने वाला समूह। मनुष्य चिन्तनशील प्राणी है। मनुष्य ने अपने लम्बे इतिहास में एक संगठन का निमार्ण किया है। वैध गुरुदत के उपन्यासों में सामाजिक चेतना विषय के अंतर्गत लेखक की सामाजिक चितेरा से संबंधित रचनाआं का सूक्ष्म एवं शोधपरक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया है। गुरुदत्त लने ऐतिहासि, पौराणिक और सामाजिक सब प्रकार के उपन्यास लिखे हैं तथापि उन्हें उच्च कोटि तथा ऐतिहासि–राजनीतिक रचनाओं का लक्ष्य भी वर्तमान समाज को कुछ सिखाना–समझाना तथा प्राचीन मुल्यों की पुनःस्थापना का प्रयास करना ही है। उक्त लक्ष्य को सशक्त रूप देने के लिए लेखक का वर्तमान–समाज के अवगुणों का विश्लेषण करना, पतन और ह्रास की चर्चा करना अथवा समाज की रूढ़ियों, पूर्वग्रहों तथा निर्मूल्य–परंपराओं पर सव्यंग्य कीचड़ उछालना, कोई अनपेक्षित बात नहीं कहा जा सकता। उपन्यासों सेसमाज की वह प्राचीन हो, मध्यकालीन या अर्वाचीन–अव्यवस्था पर प्रकाश डालना अवांछित नहीं। कथा–सूत्रों के साथ–साथ तत्कालीन समाज का स्पष्ट चित्रण जहां उपन्यास को इच्छित–आदर्श की ओर ले जाने में सफल होता है, वहां पाठक के कुतूहल शमन के साथ ज्ञान–बर्द्धन का कार्य भी करता है। उपन्यास क्षेत्र में उनका सामाजिक दृष्टिकोण, राजनैतिक केंद्र बिन्दू एवं सांस्कृतिक चेतना का चित्रण भारत में ही नहीं अपितु विश्व में स्वतंत्रता मापदंड के रूप संस्कृति विरासत, युग चेतना के प्रतीक, स्नातन वैदिक चेतना की अपूर्ण निधि के रूप में मौजूद हैं।

हिन्दी साहित्य कई मोड़ों से गुजरता हुआ आज की स्थिति तक आ पहुंचा है। साहित्य समाज का दर्पण है। समाज का वास्तविक रूप साहित्य में ही दिखाई देता है। साहित्य समाज को एक नवीन दृष्टि प्रदान करता है। प्रत्येक युग साहित्यिक धरोहर को बार–बार विवेचित एवं विश्लेषित करता है। अभिव्यक्ति मानव मन की सहज प्रवृति है। साहित्य सृजन कर एक साहित्यकार आत्मभिव्यक्ति भी करता है। और आत्मोपलब्धि भी। गद्यकाल हिन्दी साहित्य के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस काल से पूर्व हिन्दी साहित्य की रचना लगभग पद्य रूप में होती थी। उन्नीसवीं शताब्दी में आए परिवर्तनों में हिन्दी जगत में गद्य का विकास हुआ। आधुनिक युग में कहानी, निबंध, उपन्यास, नाटक, आलोचना, रेखाचित्र, रिपोर्ता आदि गद्य का उद्‌भव और विकास हुआ।

वर्तमान सभ्यता में मानव का समाज के साथ वही घनिष्ठ संबन्ध हो गया है। जो शरीर में शरीर के किसी प्रदार्थ का होता है। विलियम गर महोदय का कथन है– "मानव स्वभाव से ही एक सामाजिक प्राणी है, इसलिये उसने बहुत वर्षों के अनुभव से यह सीख लिया है कि उसके व्यक्तित्व तथा सामूहिक कार्यों का सम्यक विकास सामाजिक जीवन द्वारा ही संभव है।" रेमण्ट महोदय का कथन है कि– एकाकी जीवन कोरी कल्पना है। शिक्षा और समाज के संबन्ध को समझने के लिए इसके अर्थ को समझना आवश्यक है।[1]

टेलकट पारसन्स जो उच्च कोटि के सिद्धातवेत्ता है, कहते है कि समाज उन मानव संबंधों की पूर्ण जटिलता के रूप मे परिभाषित किया जा सकता है जो क्रियाओं के करने से उत्पन्न हुए है और वह कार्य साधन और साध्य के संबन्ध के रूप में किये गये हो, चाहे वह यर्थाथ हो और चिह मात्र। डब्ल्यू0 ग्राम ने समाज की व्याख्या'' और भी विस्तृत रूप से की है : समाज एक बहुत बड़ा समूह है और व्यक्ति उसके सदस्य है।

आधुनिक युग में उद्देश्यों उपन्यासों के प्रणेता के रूप में गुरूदत का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनके प्रायः सभी उपन्यासों में महत्वपूर्ण उद्देश्य निहित रहता है। मानव पृथ्वी लोक को छोड़कर चन्द्रमा के धरातल पर रहने का रास्ता निकालेगा। यह लेखक की कल्पना आज से कई वर्ष पूर्व की थी, जो आज साकार हो रही है।

किसी भी साहित्यकार के साहित्य को सही रूप से जानने के लिए आवश्यक है कि उसकी जीवन यात्रा का अध्ययन किया जाए। अपने जीवन काल में लेखक किन गली–गलियारों और कूचों में से होकर गुजरा है उसको जाने बिना उसके साहित्य का मर्म नहीं जाना जा सकता। कथाकार के जीवन की पृष्ठभूमि, उसका सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक वातावरण उन संस्कारों का निर्माण करता है जिन संस्कारों से कथाकार की वह विशिष्ट दृष्टि विकसित होती है जो उसके साहित्य में वैशिष्टय भिन्नता का निर्माण करती है। ऐसा प्रायः माना जाता है कि साहित्य साहित्यकार की आत्म अभिव्यक्ति ही है। विभिन्न माध्यमों, विधाओं रंगों और शैलियों में साहित्यकार की आत्म अभिव्यक्ति ही है। विभिन्न माध्यमों, विधाओं रंगों और शैलियों में साहित्यकार साहित्यिक कृति के रेशमी ताने–बाने में अत्यंत चतुराई से छिपाकर बैठा रहता है कि सामान्य पाठक के लिए उसे पकड़ने की बात तो दूर उसका अनुभव करना भी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कठिन रहता है कि समान्य पाठक के लिए उसे पकड़ने की बात तो दूर उसका अनुभव करना भी कठिन हो जाता है। इसलिए गुरूदत्त के उपन्यासों को उनके सही परिप्रेक्ष्य में जानने के लिए उनकी जीवन यात्रा के पीछे–पीछे चलना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि साहित्यकार का जीवन उसके साहित्य से इस प्रकार गुंथा रहता है कि एक से निरपेक्ष होकर दूसरे का अध्ययन नहीं किया जा सकता। गुरूदत्त का कथा साहित्य तो सही अर्थों में उनके जीवन का पूरक ही है। उनका जीवन और साहित्य परस्पर सापेक्ष ही है। कृतिकार का व्यक्तित्व ही उसके कृतित्व का निर्माण करता है और व्यक्तित्व की छाया साहित्य में परिलक्षित होती रहती है।

सामाजिक उपन्यासकार सामाजिक जीवन का चित्रण तो करता ही है, साथ में उसकी समस्याओं को भी उभारता है। अपनी रूचि एवं संस्कारों के अनुसार उसके यथार्थ तथा आदर्श रूपों का उद्‌घाटन करता है। इसमें अनुभवों को विशेष महत्व दिया जाता है। कल्पना की ओर भी उनका ध्यान जाता है, परंतु वह सीमित। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी के अनुसार –

''सामाजिक उपन्यासों में देश में चलने वाले राष्ट्रीय तथा आर्थिक आंदोलनों का भी अभ्यास बहुत कुछ रहता है। ताल्लुकेदार के अत्याचार, भूखे किसानों की दारूण दशा के बड़े चटकीले चित्र उनमें प्रायः पार जाते हैं।''[2]

आचार्य शुक्ल जी ने सामाजिक उपन्यासों में राष्ट्रीय तथा आर्थिक आंदोलनों के होने पर बल दिया है। किसानों की मनः स्थिति को लेकर लिखा गया उपन्यास भी सफल होता है ऐसा उनका मानना है।

समाज में घट रही घटनाओं का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत करना उपन्यासकार का मुख्य उद्देश्य होता है। सामाजिक उपन्यास में लेखक अपनी अनुभूत घटनाओं एवं प्रसंगों को विशेष महत्व देता है। कभी–कभी कल्पना के सहारे भी प्रसंग का महत्व बढ़ाया जाता है। वह सुनी हुई घटना को कल्पना के आधार पर भी रोचक बनाने का प्रयत्न करता है। सामाजिक उपन्यासों की प्रगति अविरत है। नित्य नए उपन्यास साहित्य में सामाजिक उपन्यास की बाढ़–सी आ गई है। चूंकि वर्तमान युग के लेखकों का ध्यान प्रायः इस कोटि के उपन्यासों की ओर सर्वाधिक है।

डॉ. सुषमा धवन के शब्दों में –

''सामाजिक प्रवृत्ति के उपन्यासकार परिवर्तनशील परिस्थितियों तथा विचार–धाराओं से प्रेरणा प्राप्त करके अपनी कला को क्रमशः नवीन सांचे में ढालते आए हैं, जिसके फलस्वरूप सामाजिक उपन्यास की परंपरा अविच्छिन्न रहकर उत्तरोत्तर समृद्ध होती रही है।''[3]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

डॉ. सुषमा धवन के उपर्युक्त कथन में समाज की बदलती हुई परिस्थितियों और विचारधाराओं को विशेष महत्व दिया गया है, जिसको आधार बनाकर लेखक उपन्यास लिखते हैं।

शोषित वर्ग, किसानों, जमींदारों को लेकर आज सामाजिक उपन्यास विशेष लिखे जाते हैं। चूंकि समाज में दबे हुए लोगों को और गिराने का प्रयास हो रहा है। भारतीय रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, व्यवहार इत्यादि को लेकर भी उपन्यास लिखे जाते हैं। प्रेमचंद जी के अनुसार –

''साहित्य की प्रवृत्ति अहंवाद या व्यक्तिवाद तक परिमित नहीं रही, बल्कि यह मनोवैज्ञानिक और सामाजिक होती जाती है। अब वह व्यक्ति को समाज से अलग नहीं देखता किंतु समाज के एक अंग के रूप में देखता है।''

प्रेमचंद जी ने व्यक्ति की पीड़ा को सामाजिक परिस्थितियों को बीच स्पष्ट किया है। समाज को आधार मान व्यक्ति की समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

समाज संस्थाओं में बड़े–बड़े परिवर्तन हुए लेकिन भारतीय समाज में परिवार संस्था आज भी ध्रुव बिन्दु की तरह जीवित है। यद्यपि वर्तमान युग में कई आर्थिक, वैज्ञानिक, सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव अब परिवार पर भी पड़ने लगा है लेकिन भारतीय परिवार के मूल में जो विशाल भावना जीवित प्रेरणा का काम कर रही है। वह उसे मिटने नहीं देगी। वर्तमान संक्रमण काल के बाद वह परिस्थितियों में परिवार संस्था पुनर्गठित होकर – मानव के उत्कर्ष में अपना योगदान जारी रखेगी।[4]

परिवार वह समूह है जो कि विवाह रक्त संबन्ध अथवा गोद लेने आदि से बंधा हुआ है। इसमें एक घर बनाकर पति–पत्नी, माता–पिता, भाई–बहन अपनी अपनी सामाजिक पृष्ठभूमियों में रहते हुए एक दूसरे को अन्तः प्रभावित करते है तथा स्वयं भी इस प्रकार प्रभावित होते है तथा संगठित होकर एक साझे की संस्कृति का निर्माण करते है। वैद्य गुरूदत्त जी ने 'मै न मानू' 1963 उपन्यास में पति–पत्नी के संबन्धों को एक नई पृष्ठभूमि मे प्रस्तुत करने वाला यह उपन्यास रोचक एवं उद्देश्य पूर्ण है। अमीर बाप की अभिमानी पुत्री माला के चरित्र के माध्यम से उपन्यासकार ने यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है किस प्रकार धन का नशा पारिवारिक जीवन की सुख शांति को नष्ट कर देता है।[5] अब न शिष्टाचार है, न त्याग, न श्रद्धा है न प्रेम। न पिता–पुत्रों के संबंधों में कर्तव्य– निष्ठा है और न पति–पत्नी के प्रेम में निष्कपटता।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय समाज का उत्थान करना है तो नारी उत्थान के बिना संभव नहीं है जब तक नारी की स्थिति नहीं सुधेरगी तब तक समाज की स्थिति में परिवर्तन नहीं आएगा। नारी के विविध रूपों में माँ के रूप में, पत्नी के रूप में, बहु के रूप में।[6]

गुरूदत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से देश की ज्वलन्त समस्याओं को उजागर किया है। सामाजिक उपन्यासों को उन्होंने वर्तमान समस्याओं को प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत किया है। ऐतिहासिक उपन्यास में भी उन्होंने अतीत के प्रकाश में वर्तमान का समाधान खोजा है। देश के सभी सामाजिक पक्षों की विस्तार से चर्चा करने का प्रयास उनके सामाजिक उपन्यासों में सफलता से किया है। जिस प्रकार राज्य में विभिन्न प्रकार की जातियां रहती हैं उनकी विभिन्न बोलियां होती हैं उसी प्रकार परिवार में भी छोटे–बड़े समर्थ और असमर्थ सब प्रकार के लोग रहते हैं। एक–दूसरे के विचारों में समानता नहीं होती है। प्रत्येक के सोचने समझने का ढंग अलग होता है। 'गृह संसद' उपन्यास में सन्त राम नामक एक ऐसी व्यक्ति की कथा है। जो सामान्य से सामान्य घटना एवं प्रसंग पर सारे परिवार की सम्मति लेना उचित समझता है। जीवन की यथार्थता को जानने परखने के लिए शिक्षा की नहीं विद्या की आवश्यकता है सिर्फ धनोपार्जन ही शिक्षा का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। वर्तमान शिक्षा में वेद शास्त्र धर्म एवं नीति का अभाव है। उपन्यासकार की मान्यता है कि आज के गुरू भी वेद शास्त्र के ज्ञाता नहीं होते, जिससे विद्यार्थियों को वास्तविक मार्गदर्शन नहीं मिलता। 'विद्यादान' उपन्यास में वैद्य गुरूदत ने नए ढंग की शिक्षा, नए ढंग के विद्यालय तथा पुस्तकालयों की मांग अपने कई उपन्यासों के द्वारा करते हैं। वर्तमान शिक्षा पद्धति खोखली हो गई है। इसमें समूल परिवर्तन का समय हो गया है। अन्य को हानि पहुंचाकर अपना लाभ होता हो, वह नीजि संगत कदापि नहीं हो सकता। किसी को धन पर अनुचित अधिकार, रिश्वत, बेईमानी अनाधिकार ये सब चोरी करने के समान है। 'सफलता के चरण' उपन्यास में रामनिरंजन, जो सेठ की आटे की मिल में नौकर हैं, ईमानदारी रहित व्यापार देख उसे उन्नति का नाम देता है और स्वयं धर्म पर अड़िग रहता हुआ नौकरी से त्याग पत्र दे देता है। 'तब और अब' का भूषण जब रिश्वत और भ्रष्टाचार के कारण रंगे हाथों पकड़ा हाता है तो प्राशिचित की सम्मति देता हुआ लेखक स्पष्ट कहता है – ''ईमानदारी से सब रूपया सरकार के पास जमा करा दो और अपनी स्मृति के अनुसार जो–जो, जिस–जिससे आज तक अनुचित रूप से प्राप्त किया है। लिखा दो और अपने किए के प्रायश्चित के रूप में सर्वथा भिखारी के रूप में जज की दया पर छोड़ दो।

पश्चात्य सभ्यता की रंगत के कारण संयुक्त परिवार की भावना टूट रही है अमीर वर्ग के लोग अपनी संतानों को विदेशी में अभ्यास के लिए भेजते हैं। जहां विद्यार्थी अपना कर्तव्य भूल अयाशी में पड़ जाते हैं। विद्या एवं शिक्षा को छोड़ वहां की चकाचौंध में इतने ग्रस्त हो जाते हैं

कि उन्हें अपने देश एवं देश की संस्कृति का भी ख्याल नहीं रहता। अनुचित शिक्षा भी संयुक्त परिवार विभाजन का एक कारण माना जाता है। 'विद्यादान' उपन्यास इसका सबल प्रमाण है।

वैद्य गुरूदत ने अपने उपन्यासों में भारत में बढ़ रही तलाक व पृथकता की समस्या को उजागर किया है। विवाह की शुद्ध भावना परिवार की नींव है। पश्चिमी सभ्यता की रंगत में आज विवाह को वासना का प्रमाण पत्र मानने लगे हैं। उनका निश्चित मत था कि अनेक पतियों का संग करने वाली व्यक्ता तथा पुर्नविवाहिता स्त्री महापुरूषों की जननी नहीं हो सकती। तलाक और पृथकता की समस्या को जन्म देती है। इसलिए उपन्यासकार ने अपने विचार को पाणिग्रहण, भूमिका में लिखा है। ''विवाह में केवल शारीरिक– सौंदर्य को एक मात्र विचार की वस्तु मानना वेश्यवृत्ति को सुलभ करना तथा विस्तार देना है। वे लोग जो विवाह संबंध में शारीरिक सौंदर्य को एकमात्र मानते हैं और विवाहित जीवन में यौन–क्रिया को ही उद्देश्य समझते हैं। विवाह को वैश्याकृति का सस्ता रूप कहने लगते हैं।

शिल्प की दृष्टि से यह एक सफल उपन्यास माना जा सकता है। गुरूदत्त जी की मान्यता है कि संयुक्त परिवार की प्रथा राष्ट्र के समाजवादी ढांचे पर आश्रित है। ईमानदारी एवं सच्चाई की नींव पर ही सामाजिक और पारिवारिक संगठन का महल टिका हुआ रहता है। यदि परिवार में एकता नहीं होती तो समाज सुचारू रूप से नहीं चल सकता। 'गुण्ठन' में भगवत–योग्यता–अयोग्यता से वाकिफ थे। विनोद की इकॉनोमिक एडवाईजर टू दि पंजाब गवर्नमेंट की जगह पर नियुक्ति हो जाती है। विनोद की उन्नति में पति अपनी स्त्री की भावमर्यादा की रक्षा के लिए जान की बाजी लगा देता था। पर आज वही पति अपने ही हाथों से पत्नी का सतीत्व लुटा रहा है। विनोद उन्नति के पथ पर चलते ही परिवार से पृथक रहने चला जाता है।

हिन्दू समाज में कोई स्त्री–पुरूष को भाई कह देती है तो पुरूष किसी स्त्री को बहिन कह देता है तो वह स्त्री हमेशा के लिए पुरूष की रक्षा पाती है। ईसाई भीनाक्षी भगवतस्वरूप के परिवार में आकर वास्तविक संरक्षण पाती है। वैसे आज हवा का रूख बदल रहा है। हिंदू समाज ने भी कई प्रकार के बुराइयों को अपने भीतर समेट लिया है। ईसाई और हिन्दू परिवार के सिद्धांतों की ओर संकेत भगवतस्वरूप के कथनों में मिलता रहता है। भगवतस्वरूप की लड़की कला के चरित्र द्वारा भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता स्थापित की गई है। कला की गोबिंद के साथ हो रही बातचीत इसका सबल प्रमाण है उपन्यास में विनोद पदार्थवादी दृष्टिकोण का पुजारी है। अनियमित आय उसे जुआरी तथा शराबी बना देती है। एक दिन पत्नी के साथ झगड़ा हो जाता है उसका। पिता के घर चली गई पत्नी। पकड़ लिया जाता है विनोद जुए में आदर सूचक पात्र

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

था। उसकी संयुक्त परिवार में रहने की भावना ने ही मीनाक्षी को हिंदू धर्म के रीति–रिवाज के प्रति आकर्षित कर दिया था।

सामाजिक समस्याओं, पारिवारिक परिस्थितियों में धर्म, नीति, आचरण आदि के पतन और पुनःस्थापनाः परिवारिक–मूल्यों के विश्लेषण, गृह–कलह और उसके परिणाम, भ्रष्टाचार, वासना और उच्छ खलता, वास्तविक शिक्षा के अभाव और पदार्थवादी स्वार्थ–लक्षी आर्थिक नीति, परिवार में नारी का स्थान, नारी की उचित शिक्षा, भारतीय संस्कृति और वैदिक धारणाएं जो पारिवारिक आधुनिकता के पतन में मार्ग प्रदर्शी ज्योति बन सकती हैं। आदि का दिग्दर्शन कराता है। 'ममता', 'विद्यादान', 'विकृत–छाया', 'भूल', 'प्रवंचना' आदि उपन्यास अनुचित पाश्चात्य शिक्षा के कुपरिणामों का चित्र प्रस्तुत करते हैं। 'प्रवंचना, ममता, भूल और मैं न मानूं' में तो पत्नी के प्रति आकर्षण व गृह–कलह और गृहस्थ–भंग तक का प्रदर्शन हुआ है। लेखक इन चित्रों का प्रदर्शन समाज के मुंह पर तमाचे के तौर पर करता है, ताकि नवलता, गोरे रंग की अस्थायी चकाचौंध और भ्रमात्मक–आडम्बर के आकांक्षियों को लगाम दी जा सके। पंकज, गुंठन, प्रवंचना, पाणिग्रहण आदि में हिंदू, ईसाई, अंग्रेज, मुस्लमान और फ्रैंच पात्रों की सभ्यता, संस्कृति और व्यवहार की चर्चा कर लेखक हिन्दुत्व द्वारा अन्य सभी मतों को प्रभावित कर सकने के अपने उद्देश्य तक पहुंच सका है। 'उन्मुक्त–प्रेम' और 'विकृत छाया' में नारी की उछृङलता और उसके गर्हित परिणामों को दिखाकर पाठक के मन में उस अवांछित–स्थिति के प्रति घृणा पैदा की गई है। पारिवारिक आदर्शों के चित्र गुंठन, सफलता के चरण, तब और अब तथा विकृत–छाया में पेश किए गए हैं। भारतीय–संस्कृति का पुनः मूल्यांकन तथा पुनःस्थापना के लिए लेखक ने 'द्रष्टा', पाणिग्रहण, स्नेह का मूल्य आदि उपन्यासों की रचना की है। कदाचित ऐसा करने के लिए उसे आधुनिक विधानों का विरोध भी करना पड़ा है। जैसा कि तलाक कानून, पितृ–सम्पत्ति में पुत्री के अधिकार का कानून, जमींदारी–प्रथा–उन्मूलन आदि।

विचार अनुभवों और संस्कारों से उत्पन्न होते हैं संस्कार और अनुभव जीवन के चलन की देन हैं। दोनों का परस्पर घना संबंध है जब लेखक का पूर्ण प्रयास विचारों और मनोद्गारों से प्रेरित होता है, तब उसके जीवन के रहन–सहन, जीवन के संपर्क तथा संघर्षों से साहित्य बनता रहता है। गुरूदत्त के घर की अवस्था एक निम्न–मध्यम वर्ग वालों की थी। पिता जी का छोटा सा व्यवसाय था जो कठिनाई से ही परिवार का भार सहन कर सकता था। विद्यार्थी जीवन में मन भले ही उदार रहा हो परंतु जेब कभी भरी नहीं रही। बचपन में आर्थिक स्थिति अच्छी न थी लेकिन धीरे–धीरे आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ लेकिन लिखने के समय आर्थिक दबाव नहीं रहा। गुरूदत लिखते हैं ''इसे मैं अपना परम सौभाग्य मानता हूं कि स्वतंत्र रूप से बिना किसी राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक अथवा सामुदायिक आश्रय की आकांक्षा से कार्य करता रहा हूं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इसका एक परिणाम यह भी हुआ है कि मैं किसी दल, संस्था अथवा संगठन को पूर्णरूप से प्रसन्न नहीं कर सका और लेखनी चलती है विचार प्रवाह के बल पर। इसमें किसी बाहरी आश्रय अथवा प्रभाव नहीं रहा।''

वैद्य गुरूदत केवल कथाकार ही नहीं विचारक, विश्लेषक और नीतिज्ञ भी हैं। उनका प्रत्येक उपन्यास अपने में कोई न कोई समस्या व्यंग्य, विचारोतेजक, सुझाव, विशेष दृष्टिकोण या मूल्यांकन को संजोए रहता है। सामाजिक उपन्यासों में मुख्यतः हिन्दू परिवार के सांसकृतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना पर विशेष जोर देते प्रतीत होते हैं। उनकी दृष्टि में परिवार एक घेरा है जिसमं एक ही रक्त के सब सदस्या सहयोग और सहकारिता कर्तव्य के सूत्रों में बंधे सम्मिलित रहते हैं। जब तक घेरे के भीतर के सभी सदस्य अपने समाज व विशेष धर्मों का उचित पालन करते हैं तब तक ही परिवार बना रहता है अन्यथा खंडित हो जाता है।

संदर्भ

1. स. श्याम सुन्दर दास, हिन्दी शहर सागर, संस्करण साँतवा, 1928, पृ0 3457
2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0 462
3. डॉ0 सुषमा धनन, हिन्दी उपन्यास, पृ0 11
4. डॉ0 राम बिलास शमा, आस्था और सौन्दर्य, पृ0 135
5. गुरूदत : 'मैं ना मानू', पृ0 187
6. गुरुदत : 'विकृत छाया', पृ0 58